

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे राल्मीकीये आदिकार्ये सुन्दरकाण्डे

॥ अष्टमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः

## ॥ अष्टमः सर्गः ॥

हनुमता पुनः पुष्पकस्य दर्शनम्

स तस्य मध्ये भ्रनस्य संस्थितो

महद्भिमानं मणिरत्नचित्रितम्।

प्रतप्तजाम्बूनदजालकृत्रिमं

ददर्श धीमान् परनाम्बुजः कपिः ॥ 5.8.1 ॥

तदप्रमेयप्रतिकारकृत्रिमं

कृतं स्वयं साधुरिति विश्वकर्मणा।

दिरं गते वायुपथे प्रतिष्ठितं

व्यराजतादित्यपथस्य लम्बं तं ॥ 5.8.2 ॥

न तत्र किञ्चिन्न कृतं प्रयत्नतो

न तत्र किञ्चिन्न महार्घरत्नरत्नं।

न ते विशेषा नियताः सुरेश्वरपि

न तत्र किञ्चिन्न महारिशेषरत्नं ॥ 5.8.3 ॥

तपः समाधानपराक्रमार्जितं

मनःसमाधानरिचारचारिणम्।

अनेकसंस्थानरिशेषनिर्मितं

ततस्ततस्तुल्यरिशेषनिर्मितम् ॥ 5.8.4 ॥

मनः समाधाय तु शीघ्रगामिनं

दुरासदं मारुततुल्यगामिनम्।

মহান্মনাং পুণ্যকৃতাং মহর্দ্ধিনাং  
যশস্বিনামগ্র্য মুদামিরালযম্ ॥ 5.8.5 ॥

রিশেষমালম্ব্য রিশেষসংস্থিতং  
রিচিত্রকূটং বহুকূটমণ্ডিতম্।  
মনোহভিরামং শরদিন্দুনির্মলং  
রিচিত্রকূটং শিখরং গিরেযথা ॥ 5.8.6 ॥

রহস্তি যৎকুণ্ডলশোভিতাননা  
মহাশনা র্যোমচরা নিশাচরাঃ।  
রিবৃত্তরিধ্বরস্তুরিশাললোচনা  
মহাজরা ভূতগণাঃ সহস্রশঃ ॥ 5.8.7 ॥

রসন্তপুষ্পোৎকরচারুদর্শনং  
রসন্তমাসাদপি চারুদর্শনম্।  
স পুষ্পকং তত্র রিমানমুত্তমং  
দদর্শ তদ্ বানররীরসত্তমঃ ॥ 5.8.8 ॥

॥ ইত্যার্ষে শ্রীমদ্রামাযণে বাল্মীকীযে আদিকাৰ্যে সুন্দরকাণ্ডে অষ্টমঃ সর্গঃ ॥